Toppersnotes

Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Level-II

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. संधि	1
2. उपसर्ग	20
3. शब्द	24
4. वचन	31
5. प्रत्यय	42
6. छन्द	69
7. वाच्य	102
8. समास	107
9. संस्कृत शिक्षण विधियां	123
10. संस्कृत भाषा कौशल विकास	162
11. मूल्यांकन	172

* एक स्वर वर्ण के अधिकतम प्रयत्न चार (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, विवार) होते हैं।

* सन्धि *

* सन्धि शब्द में सम उपसर्ग है। सन्धि शब्द का शाब्दिक अर्थ योग/मेल/जोड़/संधान होते हैं।

परिभाषा → वर्ण सन्धानां सन्धिः।
"वर्ण मेल को सन्धि कहते हैं।"

सूत्र :- परः सन्निकर्षः संहिता "अर्थात" दो अत्यन्त निकटवर्ती वर्णों के मेल में परस्पर सन्धि होती है।

* सन्धि के तीन भेद होते हैं।

(1.) **स्वर सन्धि (अच् सन्धि)** (2.) **व्यंजन सन्धि (हल् सन्धि)** (3.) **विसर्ग सन्धि।**

(1.) **स्वर सन्धि →** दो स्वर वर्णों के मेल से उत्पन्न होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर सन्धि कहते हैं।
अर्थात स्वर वर्ण + स्वर वर्ण = स्वर सन्धि

स्वर सन्धि के मुख्य रूप से **पाँच** प्रकार होते हैं।

(i) यण् सन्धि (ii) अयादि सन्धि (iii) गुण सन्धि (iv) वृद्धि सन्धि (v) दीर्घ सन्धि,

NOTE :- पररूप, पूर्वरूप और प्रकृतिभाव इन तीनों को स्वर सन्धि का प्रकार नहीं माना जाता है।
क्योंकि इन तीनों में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता है। परन्तु ये तीनों स्वर सन्धि में निहित होती है।

(i) **यण् सन्धि →** इकोयणचि
इकः यण् अचि
इक + अच्
↓ ↓
यण् असमान

इक [इ उ ऋ ऌ] + असमान अच्
↓ ↓ ↓ ↓
यण् [य व र ल]

(i) स्त्री + उत्सव

स्त्री + उ

र् ई + उ

↓

य्

स्त्र्युत्सव

(ii) श्री + अंश

श्र् ई + अं

↓

य्

श्र्यंश

श्र्यंश

(iii) परि + अत्र

र् इ + अ

↓

य्

पार्यत्र / पार्यत्र

(iv) परि + आवरणम्

पर्यावरणम्

(vi) नदी + उद्गम

नद्युद्गम / नद्युद्गम

* यदि + अपि

द् इ + अ

↓

यद्य् पि

यद्यपि

* प्रति + आहारम्

प्रत्याहारम्

* अनु + अय

अन्वय

* मधु + अरि ⇒ मध्वरि

* वधू + आगमनम् ⇒ वध्वागमनम्

* तनु + अङ्गी ⇒ तन्वङ्गी

* मनु + अन्तरम् ⇒ मन्वन्तरम्

* अनु + अत्र ⇒ अन्वत्र

* सु + आगतम् ⇒ स्वागतम्

* भानु + आगम ⇒ भान्वागम

ऋ → र

* मातृ + आज्ञा
  त + ऋ + आ
  ↓
  र
  मातराज्ञा
  मात्राज्ञा

* धातृ + अंश
  त + ऋ + अंश
  ↓
  र
  धातरंश
  धात्रंश

* पितृ + आदेश
  त + ऋ + आ
  ↓
  र
  पितरादेश
  पित्रादेश

* मातृ + अंश → मात्रंश

* मातृ + आज्ञा → मात्राज्ञा

* होतृ + अंश → होत्रंश

लृ → ल

* लृ + आकृति ⇒ लाकृति

* लृ + आकार ⇒ लाकार

* लृ + आदेश ⇒ लादेश

* अध्यक्ष
  अ ध् य + अ + क्ष + ष + अ
  इ/ई
  अधि + अक्ष

* अध्यादेश
  अध् य + आदेश
  अधि + आदेश

* प्रत्युपकार
  प्रत् + य + उपकार
  प्रति + उपकार

* साध्वागमनम्
  साधु + आगमनम्

* नार्यस्ति
  नारयस्ति
  नारी + अस्ति

*

* गुर्वाज्ञा
  गुरु + आज्ञा

* स्वागत
  सु + आगत

* धन्वादेश
  धन्व + आदेश

* प्रत्युत्तरम

* अन्वेकम्
  अनु + एकम
  अन्वेकम्

* स्त्र्याज्ञा
  स्त्री + आज्ञा

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* पर्याप्त
  परि + आप्त

* व्याप्त
  वि + आप्त

* न्याय
  नि + आय

* न्यून
  नि + ऊन

* अभ्युदय
  अभि + उदय

* अप्याहितम्
  अपि + आहितम्

* उपर्युपरि
  उपरि + उपरि

* अध्यधि
  अधि + अधि

* पित्रेकता
  पितृ + एकता

* धात्रात :
  धातृ + आत

(ii) **अयादि सन्धि** → एचोऽयवायावः

स्वर [ए → अय्, ओ → अव्, ऐ → आय्, औ → आव्] + स्वर

* शे + अनम्
  श् + ए + अनम्
  ए → अय्
  शयनम्

* रूपे + ए
  रूप् + ए + ए
  ए → अय्
  रूपये

* कवि + ए
  क् + अ व् + ये
  कवे + ऐ
  [कवये = कव् + ए]

* चे + अनम् ⇒ चयनम्
* ने + अनम् ⇒ नयनम्
* जे + अः ⇒ जयः
* भे + अ = भय
* हो + अनम् = हवनम्

* भो + अनम् = भवनम्
* लो + अनम् = लवणम्
* श्रो + अनम् = श्रवणम्
* पो + अनम् = पवनम्
* वटो + वृक्ष =
  ट् + ओ + वृक्ष → वटवृक्ष
  ओ → अव्

* गै + अकः = गायकः
* दै + अकः = दायकः
* नै + अकः = नायकः
* विधै + अकः = विधायकः

विनै + अक = विनायकः
धौ + अक = धावकः
पौ + अक = पावकः
श्रौ + अक = श्रावकः

अपवाद → वान्तो यि प्रत्यये

पदान्त में **ओ/औ** और उत्तर पद में प्रत्यय का **य** हो तो भी अयादि सन्धि होती है

जैसे –: गो + यम् = गव्यम् हो + यम = हव्यम्
भो + यम् = भव्यम् श्रो + यम = श्रव्यम्
नौ + यम = नाव्यम सौ + यम् = साव्यम्

(ii) अध्वपरिमाणे च → मार्ग अथवा दूरी के परिणाम वाचक शब्द में भी अयादि सन्धि होती है

जैसे :– गव्यूतिः ⇒ गो + यूतिः

NOTE:– उपर्युक्त उदाहरणों में अयादि सन्धि है। तथा यह सभी उदाहरण एचोऽयवावः सूत्र के अपवादिक रूप है।

(iii) गुण सन्धि → (1) अदेङ्गुणः ← गुणसंज्ञा विधायक सूत्र

अत् + एङ् + गुणः
↓ ↓
(अ) (ए ओ)

* अर्थात अ ए ओ को गुण कहते हैं।

(2) गुण सन्धि सूत्र → आद्गुणः

अ/आ + इ/ई = ए
अ/आ + उ/ऊ = ओ
अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
अ/आ + लृ = अल्

Toppersnotes
Unleash the topper in you

गुण सन्धि

* इस सन्धि में अल्व,अर समानार्थक होते हैं।

Ex:-
वाराङ्गना + इव = वाराङ्गनेव
गज + इन्द्र = गजेन्द्र
महा + ईश = महेश
रमा + ईश = रमेश
राजा + इन्द्र = राजेन्द्र
महा + इन्द्र = महेन्द्र

महा + ऊर्मि = महोर्मि
महा + उपदेश = महोपदेश
पर + उपकार = परोपकार
सूर्य + उदय = सूर्योदय
घन + उदय = घनोदय
हित + उपदेश = हितोपदेश

ऋ

Ex: —
सप्त + ऋषि
(L अ + ऋ
सप्तर्षि

देव + ऋषि = देवर्षि
महा + ऋषि = महर्षि
कृष्ण + ऋद्धि = कृष्णर्द्धि

तव + लृकार = तवल्कार

वसन्त + ऋतु = वसन्तर्तु

मम + लृकार = ममल्कार

* गुण सन्धि के **अपवाद** ⟶ गुण सन्धि के अपवाद में नित्य रूप से **वृद्धि सन्धि** होती है

Ex:- अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी

प्र + ऊह = प्रौह:

प्र + ऊढ = प्रौढ:

प्र + ऊढि = प्रौढि:

प्र + एष = प्रैष:

प्र + एष्य = प्रैष्य:

प्र + ऋणम् = प्रार्णम्

पिपासा + ऋत: = पिपासार्त

वत्सतर + ऋणम् = वत्सतरार्णम्

कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम्

वसन + ऋणम् = वसनार्णम्

ऋण + ऋणम् = ऋणार्णम्

दश + ऋणम् = दशार्णम्

सुख + ऋत: = सुखार्त:

दुःख + ऋत: = दुःखार्त:

क्षुधा + ऋत: = क्षुधार्त:

(iv) वृद्धि सन्धि

(i) वृद्धि संज्ञा विधायक सूत्र ⟶ **वृद्धिरादैच्**

वृद्धि: आत् ऐच्
↓ ↓
आ [ए/औ]

आ ए औ को वृद्धि कहते हैं।

(ii) वृद्धि सन्धि सूत्र ⟶ **वृद्धिरेचि**

अ/आ + ए/ऐ = **ऐ**

अ/आ + ओ/औ = **औ**

अ + ऋ = अर होता है परन्तु

NOTE:- अकारान्त उपसर्ग के बाद में ऋ से प्रारम्भ होने वाली कोई धातु हो तो **वृद्धि सन्धि** अर्थात अ + ऋ = आर हो जाता है।

Ex:- प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति

प्र + ऋणाति = प्रार्णति

उप + ऋच्छति = उपार्च्छति

उप + ऋणाति = उपार्णति

एक + एकम् = एकैकम्

वसुधा + एव = वसुधैव

महा + एकता = महैकता

देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्

गङ्गा + ओघ = गङ्गौघ

महा + ओज = महौज

तथा + औत्सुक्यम् = तथौत्सुक्यम्

महा + औदार्यम् = महौदार्यम्

वसुधा + ऐव = वसुधैव

पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा

महा + औषधि = महौषधि

कृष्णा + औदार्यम् = कृष्णौदार्यम्

(ख) दीर्घ सन्धि

अकः सवर्णे दीर्घः

अक [अ इ उ ऋ ऌ]

अ/आ + अ/आ = आ

इ/ई + इ/ई = ई

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

ऋ / ॠ + ऋ/ॠ = ॠ

दैत्य + अरि = दैत्यारि

हिम + आलय = हिमालय

विद्या + आलय = विद्यालय

प्र + अर्थना = प्रार्थना

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह

नित्य + आनन्दम् = नित्यानन्दम्

रत्न + आकर = रत्नाकर

श्री + ईश = श्रीश

कपि + ईश = कपीश

मुनि + ईश = मुनीश

+ ईश = कपीश
+ ईश = महीश
नी + ईश = रजनीश
ी + ईश = श्रीश
लक्ष्मी + ईव = लक्ष्मीव
मही + इन्द्र = महीन्द्र
भानु + उदय = भानूदय

वधू + उत्सव = वधूत्सव
लघु + ऊर्मि = लघूर्मि
साधु + उपकार = साधूपकार
मनु + उपयोग = मनूपयोग

पितृ + ऋणम् = पितृणम्
धातृ + ऋकार = धातृकार
होतृ + ऋकार = होतृकार
मातृ + ऋकार = मातृकार

दीर्घ सन्धि के अपवाद → दीर्घ सन्धि के अपवाद में पररूप सन्धि होती है।

* अपवादिक उदाहरणों के पदान्त में आने वाले स्वर का योग हो जाता है तथा जिस स्वर का लोप होता है। उसके बाद में आने वाले व्यंजन वर्णों का स्वत: ही लोप हो जाता है। और अन्त में बचे हुए वर्णों का मेल करके लिख दिया जाता है।

Ex:- (अ) मार्त + अण्ड = मार्तण्ड

(अस) हलस + ईशा = हलीशा
लाङ्गल + ईशा = लाङ्गलीशा
अस मनष् + ईशा = मनीषा
अत पतत + अञ्जलि = पतञ्जलि
(अ) शक + अन्धु = शकन्धु
(अ) कर्क + अन्धु = कर्कन्धु
(अ) सीम + अन्त = सीमन्त
(अ) कुल + अटा = कुलटा
(अ) सार + अङ्ग = सारङ्ग

Toppersnotes
Unleash the topper in you

पूर्वरूप सन्धि → एङः पदान्तादति

* पदान्त में एङ् (ए/ओ) तथा उत्तर पद में ह्रस्व 'अ' हो तो दोनों के स्थान पर पूर्व रूप [पहले वाला रूप] हो जाता है।

अर्थात ए + अ = एऽ
ओ + अ = ओऽ

Ex:- हरे + अत्र = हरेऽत्र
ते + अपि = तेऽपि
सकलो + अपि = सकलोऽपि
को + अपि = कोऽपि
रामो + अस्मि = रामोऽस्मि
विष्णो + अत्र = विष्णोऽत्र

पररूप सन्धि → एङि पररूपम्

*

* अकारान्त उपसर्ग के बाद में ए अथवा ओ से प्रारम्भ होने वाली कोई धातु हो तो दोनों के स्थान पर पररूप (बाद वाला रूप) आदेश हो जाता है।

अर्थात अ + ए = ए
अ + ओ = ओ

Ex:- प्र + एजते = प्रेजते
उप + एजते = उपेजते
प्र + ओषति = प्रोषति
उप + ओषति = उपोषति

NOTE:- शरीर के अंगवाचक शब्दों में भी पररूप सन्धि होती है।

Ex:- दन्त + ओष्ठ = दन्तोष्ठ
बिम्ब + ओष्ठ = बिम्बोष्ठ
अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठ

→ उपर्युक्त सभी उदाहरण वृद्धि सन्धि के अपवाद हैं।

प्रकृति भाव सन्धि → " ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम् "
[ईत + ऊत + एत]

* ई, ऊ, ए यदि द्विवचन के हों तो उनकी प्रगृह्य संज्ञा होती है।
* जिनकी प्रगृह्य संज्ञा होती है। वहाँ सन्धि का अभाव होता है। अर्थात प्रकृतिभाव सन्धि होती है जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है।

Ex:- हरी + इमौ = हरी इमौ
कवी + एतौ = कवी एतौ
विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ
भानू + एतौ = भानू एतौ
गङ्गे + इमे = गङ्गे इमे
रमे + इमे = रमे इमे

व्यञ्जन सन्धि → दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से अथवा व्यञ्जन स्वर वर्णों के मेल से उत्पन्न होने वाले विकार को व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

अर्थात व्यञ्जन वर्ण + व्यंजन स्वर = व्यंजन सन्धि

श्चुत्व सन्धि → स / त वर्ग के पहले अथवा बाद में श / च वर्ग का कोई वर्ण हो, स के स्थान पर श तथा त वर्ग के स्थान पर – च वर्ग हो जाता है।

स / त → च / श

त	थ	द	ध	न
↓	↓	↓	↓	↓
च	छ	ज	झ	ञ

Ex:-

कस + चित = कश्चित
दुस + शासनम = दुश्शासनम
निस + छल = निश्छल
रामस + चिनोति = रामश्चिनोति
दुस + चरितम = दुश्चरितम

उद + ज्वलम = उज्ज्वलम
सद + जन = सज्जन:
तत + शिवम = तच्शिवम
उत + चारणम = उच्चारणम
सत + चित = सच्चित
यज + न: = यज्ञ:
शार्ङ्गिन + जय = शार्ङ्गिञ्जय:

NOTE –: पदान्त में यदि त वर्ण तथा उत्तर पद में श वर्ण हो तो श्चुत्व सन्धि होती है परन्तु इस रूप को अग्रेषित करके "शश्छोऽटि" श के स्थान पर छ हो जाता है यदि बाद में अट् [स्वर / ह ; य, व, र] हो तो

तत + शिवम
↓
च
तच्शिवम
↓
छ
तच्छिवम

मृत + शकटिकम
↓ ↓
च छ
मृच्छकटिकम

उत + श्वास:
↓ ↓
च छ
उच्छ्वास:

ष्टुत्व सन्धि ⟶ स / त वर्ग के पहले या बाद में ष / ट वर्ग का कोई वर्ण हो तो स के स्थान पर ष व
त के स्थान पर ट वर्ग हो जाता है।

Ex:-

रामस + षष्ठ: = रामष्षष्ठ:
रामस + टिकते = रामष्टीकते

Toppersnotes
Unleash the topper in you

तत + टीका = तट्टीका

अधिस + ठाता = अधिष्ठाता

पेष + ता = पेष्टा

चक्रिन + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे

इष + त : = इष्ट :

धनुस + टंकार = धनुष्टंकार

कृष + न = कृष्ण

श्चुत्व व ष्टुत्व सन्धि के अपवाद

*

श्चुत्व	ष्टुत्व सन्धि
प्रश + न = प्रश्न:	षट् + ते = षट्ते
विश + न = विश्न:	षट् + सन्त : = षट्सन्त :
	सन + षष्ठ = सनषष्ठ

* उपर्युक्त पाँचो उदाहरणो मे किसी प्रकार की कोई सन्धि नही है।

जश्त्व सन्धि → पदान्त मे किसी वर्ग का प्रथम वर्ण हो तथा उत्तर पद मे स्वर तथा हश हो तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का 3 वर्ण हो जाता है।

↓ + स्वर / हश [ह य व र ल 5,4,3]
तीसरा → 3

Ex:- वाक् + ईश = वागीश

वाक् + हरि: = वाग्हरि:

षट् + आननम् = षडाननम्
उत् + आहरणम् = उदाहरणम्
जगत् + ईश = जगदीश
कृत् + अन्त = कृदन्त
अप् + जम् = अब्जम्

NOTE ! — वाक् + हरि = वाग्हरि – यहाँ पर जश्त्व सन्धि हुई है।

* इस रूप को आगे बढ़ाकर पूर्व सवर्ण [ह के स्थान पर पहले वाले वर्ण का चतुर्थ वर्ण] हो जाता है। और इस रूप में सन्धि भी पूर्व सवर्ण होती है।

Ex: वाक्+हरि
वाग् · हरि
↓
घ
वाग्घरि [पूर्व सवर्ण]

पत् हति
पद् हति – (जशत्व)
↓
ध
पद्धति (पूर्व सवर्ण)

अनुनासिक सन्धि → पदान्त में किसी वर्ग का **प्रथम वर्ण** हो तथा उत्तरपद में **पंचम वर्ण** हो तो **प्रथम** वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का **पंचम** वर्ण हो जाता है।

Ex:– वाक् + मयम = वङ्मयम्
उत् + नयनम् = उन्नयनम्
उत् + मुखम् = उन्मुखम्
एतत् + मुरारि = एतन्मुरारि
चित् + मयम् = चिन्मयम्
तत् + मयम = तन्मयम्
सत् + मार्ग = सन्मार्ग

षट् + नाम: = षण्णाम:
षट् + नवति : = षण्णवति :
षट् + नगर्य: = षण्णगर्य:
मृत् + मयम = मृण्मयम्

Toppersnotes
Unleash the topper in you

हो तो त वर्ग के स्थान पर भी ल वर्ण हो जाता है।

Ex:- त / द / न + ल

त, द → ल
न → लँ

उत् + लास = उल्लास
उत् + लेख = उल्लेख
तत् + लीनम् = तल्लीनम्
विद्युत + लेखा = विद्युल्लेखा
विद्वान + लिखति = विद्वाल्लिँखति
महान + लाभ = महाल्लाँभ

यत्व सन्धि → पदान्त में किसी वर्ग का **तृतीय वर्ण** तथा उत्तर पद में **स्वर** [2, 1, श, ष, स] हो तो **तृतीय वर्ण** के स्थान पर उसी वर्ग का **प्रथम वर्ण** हो जाता है।

Ex:- सम्पद् + ति: = सम्पत्ति:
आपद् + ति: = आपत्ति:
विपद् + ति: = विपत्ति:
उद् + तरम् = उत्तरम्
उद् + कर्ष = उत्कर्ष:
सद् + पुत्र = सत्पुत्र
सद् + कार = सत्कार

अनुस्वार सन्धि । पदान्त में 'म' वर्ण हो तथा उत्तर पद में कोई **व्यञ्जन वर्ण** हो तो 'म' के स्थान पर ं [अनुस्वार] हो जाता है।

म + व्यञ्जन
↓

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Ex:- सम् + धि = संधि
पम् + कज = पंकज
व्यम् + जन = व्यंजन
कम् + ठ = कंठ
गम् + ता = गमता
सम् + भवम् = संभवम्
हरिम् + वन्दे = हरिंवन्दे

NOTE:- अनुस्वार सदैव 'म्' के स्थान पर होता है परन्तु असन्त शब्दों के योग में 'न्' के स्थान पर भी अनुस्वार होता है।

Ex:- पश्चान् + सि = पश्चांसि
पयान् + सि = पयांसि
मनान् + सि = मनांसि
छन्दान् + सि = छन्दांसि
चन्द्रान् + सि = चन्द्रांसि
तेजान् + सि = तेजांसि
शिरान् + सि = शिरांसि

परसवर्ण सन्धि → यह स्वतंत्र संधि नहीं होती है। अनुस्वार संधि का ही अग्राश्रित रूप होता है इसमें अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण [बाद वाले स्थान का पंचम वर्ण] हो जाता है।

संस्कृत भाषा में अनुस्वार से ज्यादा परसवर्ण का प्रयोग उचित माना जाता है। क्योंकि यह अंतिम परिवर्तन होता है।

Ex:- संधि = सन्धि
कंठ = कन्ठ
गंता = गन्ता
व्यंजन = व्यञ्जन
संभवम् = सम्भवम्